The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 1 | Issue 4 | November 2023
ISSN: 2583-973X
Website: www.theacademic.in

पुस्तकालय संघों के विभिन्न आयामः एक अध्ययन

संजय शाहजीत
सहायक प्राध्यापक, पुस्तकालय एवं सूचना विभाग, मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर

ARTICLE DETAILS
Research Paper

Keywords :
पुस्तकालय संघ, व्यवसायिक संघ, इफला, सीलीप, आईएलए, आइजलिक।

ABSTRACT
व्यवसायिक संघ का होना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि नियमों का पालन एवं मानवीय मूल्यों के लिए सही कदम उठाने हेतु साहस की आवश्यकता होती हैं। स्थानीय संघ अपने गतिविधियों से संगठन के मौजूदा हितों के लिए स्वयं संघर्ष करने में असमर्थ होते है। पुस्तकालय व्यवसाय को प्रतिष्ठित व्यवसाय के रूप में स्थापित करने के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर पुस्तकालयों के संवर्धन एवं पुस्तकालय आंदोलन को तेज गति प्रदान करने के लिए पुस्तकालय पेशेवरों को संगठित करने का प्रयास किया जाता है। दूरगामी मुद्दों के निवारण के लिए एक व्यक्ति या छोटे संघ द्वारा मामलों से निपटने की समझ कम होती है इसके लिए बड़े संघों की भूमिका प्रभावी होती है। पुस्तकालय संघ का मूल कर्तव्य पुस्तकालय एवं सूचना संस्थानों एवं अनुसंधान केन्द्रों में पेशेवर ज्ञान, विस्तार एवं पुस्तकालय व्यवसाय के बीच नेतृत्व एवं कार्यक्रम को बढ़ाना होता है। पेशेवर संघों में अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय एवं स्थानीय संघों का उद्भव होना एवं देश विशेष के लिए व्यवसायिक गतिविधियों को पूरा करने प्रयासरत है।

परिचय

Corresponding Author: sanjayshahjit@matsuniversity.ac.in

किसी भी कार्य एवं व्यवसाय के लिए संघ का होना क्यों आवश्यक है ये दो तत्वों पर निर्भर करता है पहला संगठन व्यवस्था एवं दूसरा कार्यरत कर्मचारीगण। व्यवसायिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि संबद्ध नियमों का पालन एवं मानवीय हितों की रक्षा के लिए समय–समय पर सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है। क्योंकि कोई व्यक्ति विशेष या व्यवसायिक संगठन अपने मौजूदा हितों के लिए स्वयं संघर्ष करने में असमर्थ होते है। ऐसी स्थिति से निपटने हेतु व्यवसायिक संघ नियमों का पालन कराने एवं हितों की रक्षा के लिए एक मजबूत मंच के रूप में कार्य करते हुए यथासंभव संघ के लिए प्रयास करते है।

संघ अंग्रेजी के शब्द एसोसिएशन का हिन्दी रूपांतरण है एसोसिएशन शब्द असोसिएट से बना है जिसका अर्थ होता है एकत्रित होना या एक साथ जुड़ना अर्थात अपने उद्देश्यों के लिए एक होकर कार्य करने वाले व्यक्तियों एवं संस्थाओं के समूह को संघ कहते है।

संघ शब्द संस्कृत से उद्घृत हुआ है जिसका अर्थ सभा, संगठन, दल, गण या समुदाय होता है। मनुष्यों का वह समुदाय जो अपने उद्देश्यों के लिए एकत्रित होते हैं।

आज विभिन्न व्यवसायिक संघों का निर्माण हो चुका है जैसे चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स, इंडियन लाइब्रेरी असोसिएशन, इंडियन मेडिकल असोसिएशन, राजस्थान पुस्तकालय संघ, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एफआईडी, इफला जैसे संघ आदि। अन्य व्यवसायों की तरह पुस्तकालय व्यवसाय भी अछूता नहीं है और समय के साथ कई पुस्तकालय संघों का गठन हुआ।

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान पाठयक्रम के लिए यह बेहतर समय रहा है जिसका बड़ा लाभ पुस्तकालय विज्ञान के पाठ्यक्रम संचालित संस्थानों के लिए ज्यादातर लाभप्रद रहा है। पुस्तकालय व्यवसाय को प्रतिष्ठित व्यवसाय के रूप में स्थापित करने के लिए राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर पुस्तकालयों के विकास एवं संवर्धन के लिए पुस्तकालय आंदोलन को तेज गति प्रदान करने के लिए पुस्तकालय व्यवसायियों को संगठिन करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका की आवश्यकता है।

वैश्विक परिप्रेक्ष में पुस्तकालयाध्यक्षों, विद्वानों और शिक्षकों के एक समूह ने सार्वजनिक उपयोग के लिए पुस्तकों या ज्ञान के संग्रह की नींव और प्रबंधन के लिए न्यूयार्क में सन 1852 में एकत्रित हुए। मई 1876 में कुछ पुस्तकालय उपयोकर्ताओं द्वारा 1853 की बैठक को लेकर फिलाडेल्फिया में महान प्रदर्शनी के संबंध में एक समान सभा का प्रस्ताव रखा गया।

4 अक्टूबर 1876 को होने वाली बैठक की घोषणा में प्रमुख पुस्तकालय पेशेवरों और विदेशों के प्रमुख पुस्तकालयाध्यक्षों को भेजी गई थी। इस सभा के परिणामस्वरूप, अमेरिकन पुस्तकालय संघ (एएलए) का औपचारिक रूप से उद्घघाटन 4 अक्टूबर 1876 को हुआ और इसके एक साल बाद ही युके में लाइब्रेरी एसोसिएशन (एलए) ने इसका अनुसरण किया।

साहित्यिक समीक्षा

लिलार्ड (लिंडा) और अगि (जिम) 2005 ''छात्रों और नए पुस्तकालयाध्यक्ष के लिए पुस्तकालय संघों का वैश्विक दृष्टिकोण'' प्रस्तुत शोध पत्र में पुस्तकालय संघों में छात्रों के शामिल होने के लिए मार्गदर्शन बताया गया है। यह पेशेवर संघ को पहचानने का एक माध्यम है जिसमें कुछ निहितार्थ पुस्तकालय संघों का तुलनात्मक रूप से समीक्षा कर सके। जिसमें बड़े संघों की अपेक्षा स्थानीय संघ पर ज्यादा आश्वासन दिया गया है। 18

लींसी (बेवरली पी.) 2010 '' व्यवसायिक संघ एवं पुस्तकालय शिक्षा'' यह पत्र शिक्षा एवं प्रशिक्षण पर जोर देता है दुर्लभ पुस्तक एवं पांडुलिपियों से संबंधित विशेषज्ञता की मांग करता है। अमेरिकन पुस्तकालय संघ (एएलए) सबसे पुराना एवं सबसे बड़ा व्यवसायिक पुस्तकालय संघ है जो केंद्रीय भूमिका में है। पुस्तकालय शिक्षा के लिए मानक विकसित करने विभिन्न पुस्तकालय के शैक्षणिक कार्यक्रमों को मापने के लिए सहमति प्रदान की। व्यवसायिक संघ क्षेत्रीय आधार पर प्रशिक्षण को प्राथमिकता में रखा है जो विशेष रूप से एएलए और मान्यता के लिए लंबे समय से चले आ रहे कार्यक्रम के लिए किया गया है।1

जमाल (आसमा) 2017 ''व्यवसायिक नैतिकता प्रदान करने में तेलंगाना पुस्तकालय संघ की भूमिका'' यह शोध पत्र व्यवसायिक नैतिक पर प्रमुख से चर्चा करता है जिसमें प्रदर्शन में मानकों

को बनाए रखने पेशेवरों के लिए महत्वपूर्ण है। पेशेवर नैतिकता का पालन करते हुए कर्तव्य और उन मार्गदर्शन सिद्धांतों पर प्रकाश ड़ालता है जो डॉ. एस आर रंगनाथन द्वारा दिए सिद्धांतों के आधार पर नैतिकता को नियंत्रित करता है। जिसमें पाया गया कि पुस्तकालय सेवाओं में सुधार के लिए पुस्तकालयाध्यक्षों को व्यवसायिक नैतिकता का पालन करना चाहिए। 2

पधान (हृदयानंद) 2018 ''भारत में पेशेवर पुस्तकालयों और उसके विकास में पुस्तकालय संघों की भूमिका एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'' पुस्तकालय संघ का मूल कर्तव्य पुस्तकालय एवं सूचना संस्थानों एवं अनुसंधान केन्द्रों में पेशेवर ज्ञान, विस्तार एवं पुस्तकालय व्यवसाय के बीच नेतृत्व एवं कार्यक्रम को बढ़ाना। इस पत्र में पुस्तकाय एवं पेशे से संबंधित सभी संघों को शामिल किया गया है। विकास एवं प्रभावी विकास के लिए संघ द्वारा आपसी सहयोग होना चाहिए। इस पत्रानुसार पुस्तकालय संघों को पुस्तकाय संघ के विकास के लिए प्रयास करना चाहिए और पुस्तकालय की स्थिति एवं कार्मिकों की स्थिति में सुधार करना चाहिए। 19

महत्व

पुस्तकालय संघ एक सामुदायिक संगठन है जो संसाधनों के साझेदारी और समुदाय के सदस्यों के बीच वितरित करने पर बल देता है इसके कुछ महत्व निम्नानुसार है–

पुस्तकालय संघ के विकास एवं पुस्तकालय आंदोलन को गति देने आवश्यक संचालन के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। जिस हेतु शासन स्तर पर इसके लिए प्रयास किये जाने चाहिए। जनता के समक्ष इसका विस्तार कर उन्हें बेहतर संसाधनों उपयोग के लिए प्रेरित किया जा सके।

पुस्तकालय संघों को आवश्यक आर्थिक सहायता प्रदान करने की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए जिससे पुस्तकालय संघ के महती उद्देश्यों को पूरा किया जा सके। इसके लिए शासन स्तर पर प्रयास सुनिश्चित होना चाहिए। दूरगामी मुद्दों के निवारण के लिए एक व्यक्ति या छोटे संघ द्वारा मामलों से निपटने की समझ कम होती है इसके लिए बड़े संघों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

पुस्तकालय संघ समुदाय को अपने अधिकारों की रक्षा करने ओर उनके बारे में जनमानस को ध्यान में रखते हुए कार्य करना होता है।

पुस्तकालय संघों के माध्यम से लोगों को शिक्षा का साधन भी मिलता है। ये संगठन विभिन्न प्रकार की ग्रंथ संग्रहित करते हैं जिनका उपयोग जन सामान्य अपने अध्ययन या जीवन में बेहतर शिक्षा ग्रहण करने में करते है।

उद्देश्य

पुस्तकालय संघ एक सामुदायिक संगठन होता है जो अपने संघ के पेशेवरों को संगठित रखता है, निर्धारित नियमों एवं निर्देशों से नियंत्रित करता है –

व्यवसायिक उन्नति के प्रयास– पुस्तकालय संघ में एक ही पेशे से संबंधित एक या अधिक व्यक्ति मिलकर संगठन की सदस्तयता लिए होते है जो अपने निहित स्वार्थ या उद्देशों को प्राप्त करने के लिए संगठित रहते है। संघ द्वारा व्यवसायियों को दक्ष एवं अद्यतन बनाने के लिए प्रयास किया जाता है।

हितों की रक्षा– पुस्तकालय संघ अपने सदस्यों के लिए उनकी आवश्यकतानुसार सुविधाएं उपलब्ध करने का प्रयास किया जाता है, संघ द्वारा उनकी ओर प्राथमिकता से ध्यान दिया जा रहा है कि नहीं इस ओर प्रतिद्वंद्वी सदस्यों द्वारा प्रमुखता से नजर रखा जाता है। कुछ भी गलत होते देख उनके द्वारा प्रमुखता से निषेध किया जाता है।

अधिनियम के लिए प्रयास– अच्छी पुस्तकालय सेवा के लिए पुस्तकालय अधिनियम का होना बहुत ही अनिवार्य है। अधिनियम होने से नियमों को लागू करने में ज्यादा व्यवधान का सामना नहीं करना पड़ता है और कार्य भी नियम संगत होता है। ज्यादातर स्थानों में देखें तो पुस्तकालय अधिनियम लागू किया जा चुका।

प्रशिक्षण में सुधार– संघ द्वारा अपने सदस्यों को बाजार अनुकूल बनाए रखने और क्षमता वृद्धि के लिए इस प्रकार के अयोजन किया जाता है, जिससे कम कुशल से उच्च कुशल हो सके।

जागरूकता का प्रसार– पुस्तकालय संघ एक बड़ा संघ होता हैं जरूरी नहीं की सदस्य अपने संघ के कार्यलय में मिले ऐसा ज्यादातर संभव ही नहीं है ऐसी स्थिति में संघ द्वारा गतिविधियों से अवगत रखने के लिए विभिन्न आवधिकता का प्रकाशन किया जाता है जिससे उन्हें जानकारी से अद्यतन रखा जा सके।

सहभागिता को बढ़ाना– पुस्तकालय संघ अपने सदस्यों के बीच सामुदायिक सहभागिता को मजबूत रखने के पक्ष होते है उन्हें अपनी उपयोगिता बताने के लिए उन्हें अवसर उपलब्ध कराता है। अर्थात मिलकर कार्य करने की भावना से संबद्ध करता है।

संसाधन स्त्रोतों में सहभागिता– जरूरी नहीं की एक स्थानीय स्तर के संघे के पास जरूरी अधोसंरचना उपलब्ध हो, विभिन्न प्रकार के संसाधनों के लिए संघ द्वारा सहभागिता सुनिश्चित करते हैं।

प्रकाशन– पुस्तकालय संघ द्वारा अपने संघ के माध्यम से होने वाली गतिविधियों को अधिक व्यापक रूप से प्रसार की आवश्यकता होती है। संघ जितना बड़ा होगा उसका क्षेत्र उतना ही विस्तृत होगा। संघ संगोष्ठियां, सम्मेलन, प्रशिक्षण गतिविधियों का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। जिन्हें नियमित आवधिकता से प्रकाशित किया जाता है।

कार्य

श्याम सुंदर अग्रवाल के पुस्तकालय एवं समाज के अनुसार पुस्तकालय संघ के निम्नलिखित कार्य स्पष्ट है–

1. वर्तमान स्थिति का आंकलन कर भावी योजना की तैयारी की जानी चाहिए।
2. पुस्तकालय संघ संबंधित कार्यों में जागरूकता एवं रूचि के विकल्पों की ओर संघ के सदस्यों को परिचित कराना।
3. राज्यों में पुस्तकालय अधिनियम पारित कराना एवं सुझाव साझा करना।
4. संघ के सदस्यों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करना, उनकी दक्षता बढ़ाना।

5. पुस्तकालय संघ अपने कार्यों के लिए एक मानक निर्धारित करना एवं उच्च गुणवत्ता के कार्यों पर ध्यान देना।
6. छोटे संघो को पुस्तकालय संघ द्वारा प्रोत्साहन एवं निर्देश देना।
7. कर्मचारियों के हित साधनों के लिए कार्य करना एवं उनकी रक्षा के लिए मंच प्रदान करना।
8. वित्तीय सक्षमता के साथ सदस्यों के लिए सम्मेलन का आयोजन करना।
9. व्यवहारिक शिक्षण एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था करना।
10. अंतर ग्रंथालय ऋण प्रदान करने के लिए नियम एवं निर्देश तैयार करना।
11. सूचना सेवा संबंधित कार्यों को प्राथमिकता में रखना।
12. संसाधनों के लिए स्त्रोतों के उपयोग हेतु कंसोर्टिया उपलब्ध कराना।
13. संघ के सदस्यों को विकट परिस्थिति के लिए आर्थिक सहायता उपलब्ध कराना।

भारत सरकार द्वारा 1957 को प्रोफेसर के.पी. सिन्हा की अध्यक्षता में पुस्तकालय परामर्श समिति का गठन किया गया था जिनके अनुसार निम्न कार्य है–

1. भाईचारे की भावना के साथ कार्य करना।
2. एक स्वच्छ आचार संहिता का निर्माण करना।
3. संघ सदस्यों के प्रशिक्षण स्तर को बढ़ाना।
4. सेवा शर्तों को बेहतर करने के लिए प्रयास करना।
5. पुस्तकालय सेवा का विस्तार करना।

पुस्तकालय संघ की प्रमुख गतिविधियां

शिक्षा एवं प्रशिक्षण– पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के विश्वविद्यालय शिक्षा के अनिवार्य प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित करना और कामकाजी पेशेवरों के लिए सतत शिक्षा कार्यक्रम। पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान शिक्षा में उचित मानकों को बनाए रखने के लिए एक मान्यता प्राप्त निकाय

के रूप में कार्य करना। पुस्तकालय व्यवसायी और उनके प्रणालियों के अच्छे प्रदर्शन को पहचानने के लिए पुरस्कृत करना एवं पुरस्कारों की स्थापना करना।

प्रकाशन– पुस्तकालय संघ द्वारा गतिविधि प्रसार के लिए विभिन्न प्रकार के प्रकाशन किया जाता है जिसकी एक नियमित पत्रिका एवं समाचार प्रकाशन के साथ–साथ कार्यवाही, सूचीकरण, अनुक्रमणीका, ग्रंथ, ग्रंथसूची एवं संदर्भ प्रकाशित किया जाता है।

सम्मेलन– पुस्तकालय व्यवसायियों को मिलने, विचार साझा करने, अनुभव एवं विशेषज्ञता के आदान–प्रदान करने के लिए सम्मेलन, सेमिनार एवं व्याख्यान का आयोजन करना।

शोध– पुस्तकालयों के बीच आपसी सहयोग के लिए तालमेल के साथ बेहतर समन्वय से शोध कार्य के लिए दिशात्मक निर्देशक के रूप में कार्य करना, प्रक्रियाओं, तकनीकों और उपकरणों के संबंध में संहिताओं एवं मैनुअल को तैयार करना। शोध प्रक्रिया को गति देने के लिए ऐसे क्षेत्रों को पहचानना, जिस पर विचार नहीं किया गया है। पुस्तकालय सेवाओं एवं सुविधाओं, सूचना उपयोक्ता की मांग, नए शोध को बढावा देने के लिए प्रयास करना आदि शामिल है।

सहयोग– सामान्य उद्देश्यों वाले अन्य देशों के राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ सहयोग से कार्य एवं सहकार करना। पुस्तकालय अधिग्रहण में लगने वाले कमियों को दूर करने के लिए प्रकाशकों के साथ जुड़े रहना।

पुस्तकालय प्रसार– जनमानस में पुस्तकालय के प्रति जागरूकता एवं पढ़ने की अध्ययन प्रवृत्ति में वृद्धि के लिए प्रदर्शनी, मेला एवं पुस्तकालय सप्ताह का आयोजन करना।

पुस्तकालय संघ के प्रकार–

1. **अन्तर्राष्ट्रीय संघ–** ऐसे संघ जिनका कार्य एवं विस्तार क्षेत्र विस्तृत रूप से पूरे विश्व में होता है। जैसे एफआईडी, इफ्ला।
2. **राष्ट्रीय संघ**– किसी एक राष्ट्र की सीमा के अंदर संबंधित संघ जैसे– इंडियन लाइब्रेरी एसोसिएशन (आईएलए)।

3. **स्थानीय एवं राज्य स्तरीय संघ**– इसके अंतर्गत ऐसे पुस्तकालय संघ आते है जिनका कार्य क्षेत्र राज्य स्तर पर अपने स्थानीय क्षेत्र होते है जैसे– बंगाल लाइब्रेरी एसोसिएशन, दिल्ली लाइब्रेरी एसोसिएशन।

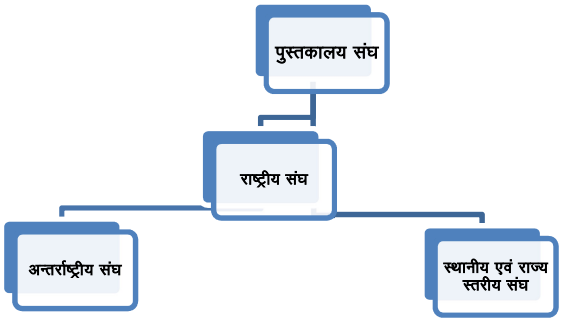

विभिन्न पुस्तकालय संघों की भूमिकाएं

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संघ देखें तो बहुत से है पर वास्तविक वैश्विक रूप से जिनका नाम लिया जाता है, वह गिनती के मात्र है जिनके द्वारा प्रमृखता से कार्य किया जा रहा है। जैसे – एएलए, एसलिब, सीलीप, इफ्ला, एफआईडी।

अमेरिकन पुस्तकालय संघ (आईएलए)–

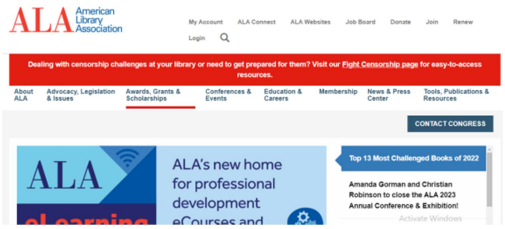

ALA American Library Association

Source: https://www.ala.org/

अमेरिकन पुस्तकालय संघ विश्व का सबसे बड़ा पुस्तकालय संघ है जिसका मुख्यालय शिकागो में स्थित है। पुस्तकालय पेशेवरों द्वारा एक सम्मेलन का आयोजन किया गया था जिससे अमेरिकन पुस्तकालय संघ का उदय हुआ। 6 अक्टूबर 1876 को संघ की स्थापना की गयी। यह सबसे पुराना पुस्तकालय संघ है जिसकी स्थापना का श्रेय मेलविल डेवी को दिया जाता

है। एएलए का मुख्य उद्देश्य पुस्तकालय एवं पुस्तकालयाध्यक्षों का संगठन है जिसके पुस्तकालय पेशेवरों और पुस्तकालय सेवाओं में सुधार लाना तथा व्यापक लक्ष्य को प्राप्त करना है।

आईएलए के प्रमुख प्रकाशन–

1. एएलए हैण्डबुक ऑफ ऑर्गनाइजेशन्स एंड मेम्बरशीप डायरेक्टरी
2. एएलए इयर बुक
3. अमेरिकन लाइब्रेरिज
4. एएलए बुलेटिन बुकलिस्ट
5. लाइब्रेरी टेक्नोलॉजी रिपोर्ट।

इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ लाइब्रेरी एसोसिएशन एण्ड इंस्टीट्यूशन (इफला)

यह स्वतंत्र, गैर लाभकारी संस्था है जो अन्तर्राष्ट्रीय संघ के रूप में कार्य कर है। पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के लिए मंच है। पुस्तकालय और सूचना सेवाओं एवं उपयोक्ताओं के हितों के लिए कार्य करता है। इसकी स्थापना अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 30 सितम्बर 1927 को एडिनबर्ग स्कॉटलैण्ड में हुआ जोकि लाइब्रेरी एसोसिएशन द्वारा आयोजित किया गया था। इफला का कार्यालय नीदरलैंड के द हेग में स्थित है। इस महासंघ के तीन प्रमुख भाग है– कार्यकारिणी संघ, परामर्शदात्री, सामान्य समिति।

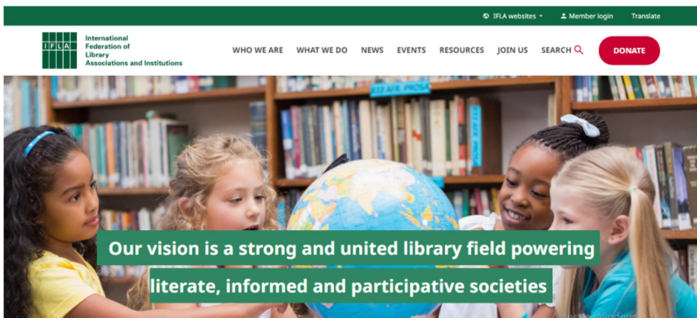

Source: https://www.ifla.org/

इफला के प्रमुख उद्देश्य–

1. पुस्तकालय सूचना सेवाओं के लिए उच्च मानक निर्धारण एवं निर्देशन करना।
2. पुस्तकालय पेशेवरों के अधिकारों के लिए कार्य करना।
3. संघ के सदस्यों के लिए प्रतिनिधित्व मंच प्रदान करना।
4. अनुच्छेद 19 से संबंधित स्वतंत्रता के सिद्धांतों का समर्थन करना।
5. विविध देशों के बीच अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों को बढ़ावा देना
6. शोध कार्यों को गति देना।

प्रमुख गतिविधियां

इफला के किये जाने वाले प्रमुख गतिविधियां निम्नलिखित है–

1. पुस्तकालय सेवाओं के विकास एवं बेहतर नियोजन के लिए परामर्श देना।
2. पुस्तकालय संबंधित योजनाओं के लिए तकनीकी सहायता प्रदान करना।
3. अन्य संगठनों के प्राप्त सहायता को संगठन की व्यवहारिक परियोजनाओं में लगाना।
4. विकासशील देशों के लिए सेवांए देना।
5. पुस्तकालय सेवाओं के क्षेत्र में सम्मेलन एवं सभाओं का आयोजन करना।

एफआईडी (इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ डॉक्यूमेंटेशन)

एफआईडी की स्थापना ब्रूसेल्स में 1895 में हुआ था। अमेरिकी पेशेवरों में पॉल आटलेट और हेनरी ला फॉन्टेन ने इस संस्था को स्थापित किया था जो ग्रंथ संदर्भ सूची के क्षेत्र में एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था के रूप में स्थापित किया। इस संगठन के तीन भाग है–

1. सामान्य सभा,

2. कार्यकारी सभा एवं

3. सचिवालय।

एफआईडी के उद्देश्यः –

1. प्रलेखन सेवाओं का विस्तार करना।
2. कार्यों में एकरूपता हेतु मानक निर्धारित करना।
3. प्रलेखन के क्षेत्र में अनुसंधान को प्रोत्साहित करना।
4. अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नेटवर्क के रूप में स्थापित करना।
5. प्रलेखन से संबंधित रणनीतिक विकास योजनाओं का क्रियान्वयन करना।
6. एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था के रूप में स्थापित करना आदि।
7. प्रलेखन सेवा में कार्यरत कार्मिकों के लिए प्रशिक्षण आयोजित करना।

गतिविधियां

एफआईडी प्रलेखन के क्षेत्र में अनुसंधान को ज्यादातर महत्व दिया और सूचना पेशेवरों के लिए अवसर उपलब्ध कराया। इनके द्वारा किये गए कुछ गतिविधियां निम्नलिखित है–

प्रलेखन सेवा एवं संस्थानों में कार्यरत कर्मियों के लिए शिक्षा एवं प्रशिक्षण का आयोजन करना जिससे अपने कार्यक्षेत्र में बेहतर कर सके। एफआईडी द्वारा 1973 में न्यूज बुलेटिन का प्रकाशन किया गया जिसमें प्रलेखन केन्द्रों के कार्य निर्धारित किए गये। प्रलेखन तथा ग्रंथ संदर्भ सूचियों के सभी पदों के लिए टर्मिनोलॉजी की सूची तैयारी की। भाषा से संबंधित एक प्रलेख तैयार करना जिससे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सारांश तैयार किया जा सके। यूनेस्को के साथ मिलकर प्रशिक्षण निर्देशिका तैयार करना, ग्रंथालय एवं प्रलेखन गतिविधियों के लिए मानकीकरण करना एवं यंत्रीकरण पर हस्त पुस्तिका प्रकाशन करना आदि।

सीलीप (चार्टर्ड इंस्टीट्यूट ऑफ लाइब्रेरी एडं इंफॉर्मेशन प्रोफेशनल्स)

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर सीलीप संस्था भी पुस्तकालय पेशेवरों का प्रमुख निकाय है। पुस्तकालय संघ युके एवं आईआईएससी के सम्मेलन से 2002 में सीलीप अस्तित्व में आया। सीलीप अपने सदस्यों को पूरे समय व्यवहारिक सहयोग प्रदान करता है, साथ ही उनकी शिक्षा, व्यवहारिक प्रशिक्षण, व्यवसायिक विकास के लिए सहायता करता है। सीलीप अपने समुदाय के सदस्यों के लिए सक्षमता से उनके व्यवसायिक विकास के लिए कार्य करते है जो उनके उद्देशों में शामिल

है। इनके प्रमुख उद्देश्यों में सूचना निर्माण, सूचना आदान–प्रदान और ज्ञान संसाधन के लिए उत्कृष्ट मानक को निर्धारित करना, समन्वय करना एवं विकास के लिए कार्य करना है।

राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करने वाले प्रमुख पुस्तकालय संघ

भारतीय पुस्तकालय संघ (आईएलए)

आईएलए देश का सबसे बड़ा पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान निकाय है जिसकी स्थापना 30 सितम्बर 1933 को कोलकाता में हुआ। 1964 के बाद से इसका मुख्यालय दिल्ली स्थनान्तरित किया गया, जहां वर्तमान मुख्यालय दिल्ली में स्थित है। यह ऑल इंडिया लाइब्रेरी कॉन्फ्रेंश के परिणामस्वरूप आया। देश में पुस्तकालय व्यवसाय का प्रतिनिधित्व करने वाले राष्ट्रीय संघ है। यह संघ भारत में सभी स्तरों पर पुस्तकालय एवं सूचना व्यवसायी के विकास एवं प्रशिक्षण के लिए निरंतर अवसर उपलब्ध कराने प्रयासरत है।

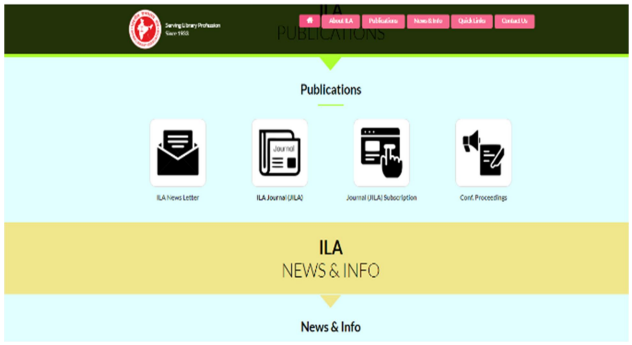

Source: https://ilaindia.co.in/

आईएलए के उद्देश्य – आईएलए के व्यापक उद्देश्य निम्नलिखित है–

1. पुस्तकालय आंदोलन को आगे बढ़ाना।
2. पुस्तकालयाध्यक्षों के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था करना एवं उनकी स्थिति में सुधार करना।
3. शोध को बढ़ावा देना एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ सहयोग करना।

4. सार्वजनिक पुस्तकालय सेवाएं स्थापित करने के लिए पुस्तकालय अधिनियम पारित करवाना।
5. पुस्तक, पत्रिका एवं बुलेटिन का प्रकाशन करना।
6. प्रलेखन एवं सूचना केन्द्रों की स्थापना करना एवं कार्य को सुगम बनाना।
7. पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान की शिक्षा देने वाले संस्थानों का प्रत्यायन करना।
8. पुस्तकालय एवं सूचना से संबंधित मानकों एवं दिशा निर्देशों का निर्माण करना।
9. सेमीनार, कॉफ्रेंस जैसी गतिविधियों का आयोजन कर संगठनात्मक मुद्दों पर चर्चा के लिए मंच प्रदान करना।

आईएलए के प्रकाशन

1. आईएलए (मासिक)
2. जेआईएलए (त्रैमासिक)
3. अखिल भारतीय पुस्तकालय सम्मेलन कार्यवाही (1978)।

आइजलिक (इंडियन एसोसिएशन ऑफ स्पेशल लाइब्रेरिज एण्ड इन्फॉर्मेशन सेन्टर्स)

आइजलिक की स्थापना 3 सितम्बर 1955 में कलकत्ता में हुई थी। जोकि भारत का प्रमुख विशिष्ट पुस्तकालय संघ है। इसके सदस्यों से एक सभा का गठन किया जाता है। संघ का सम्मेलन प्रति दूसरे वर्ष देश के विभिन्न शहरों में आयोजित होता है। यह विशिष्ट पुस्तकालय एवं सूचना सेवाओं तथा तकनीकों में शोध केन्द्र के रूप में कार्य कर रहा है।

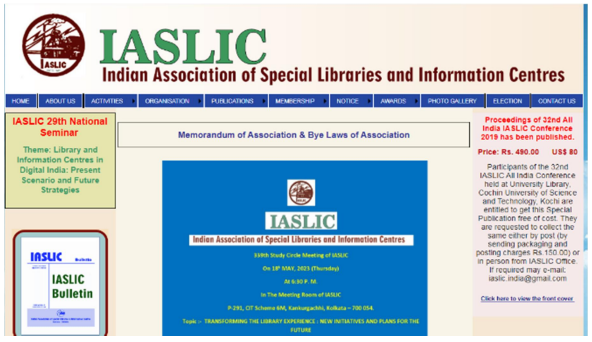

Source: http://www.iaslic1955.org.in/Default.aspx?PageID=62

आइजलिक के उद्देश्य

इस संघ में प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है–

1. विशिष्ट पुस्तकालय सेवाओं में पारस्परिक सहयोग में वृद्धि।
2. साहित्यिक प्राप्ति, नियोजन एवं प्रसार करना।
3. प्रलेखन गतिविधियों में गुणात्मक सुधार करना।
4. कार्यों हेतु व्यक्तियों एवं संस्थानों के साथ समन्वय करना।
5. पुस्तकालय कर्मियों की तकनीकी दक्षता में वृद्धि के लिए प्रयास करना।
6. विशिष्ट विषय के सूचना केन्द्र के रूप में कार्य करना एवं अन्य सहायक कार्य करना।

आइजलिक के प्रकाशन

आइजलिक के प्रकाशन निम्नलिखित है–

1. आइजलिक न्यूजलेट– संघ के सदस्यों को गतिविधियों से परिचित रखने के लिए तथा शोध से संबंधित जानकारी के लिए।
2. आइजलिक बुलेटिन त्रैमासिक पत्रिका– शोध लेखों के प्रकाशन के लिए निःशुल्क सेवा।
3. इंडियन लाइब्रेरिज साइंस एब्स्ट्रेक्ट यह एक सार पत्रिका है जिसकी आवृत्ति त्रैमासिक सार के रूप में प्रकाशन होता है।
4. महत्वपूर्ण लेखों पर विद्वानों के लेख का प्रकाशन सम्मेलन के अवसर पर किया जाता है।

स्थानीय एवं राज्य स्तरीय संघ– इसके अंतर्गत ऐसे पुस्तकालय संघ आते है जिनका कार्य क्षेत्र क्षेत्रीय आधार पर होते हैं। भारत में पुस्तकालयों एवं पुस्तकालय पेशेवरों के विकास के लिए बड़ी संख्या में संघ स्थापित किए गए हैं जिनमें कुछ प्रमुख निम्नलिखित है–

क्रमांक	संघ का नाम	वर्ष	स्थान
1	आंध्र देश पुस्तकालय संघ	1914	आंध्र प्रदेश
2	महाराष्ट्र पुस्तकालय संघ	1921	महाराष्ट्र
3	बंगाल पुस्तकालय संघ	1925	पश्चिम बंगाल
4	बड़ौदा राज्य पुस्तकालय संघ	1926	गुजरात
5	मद्रास पुस्तकालय संघ	1928	मद्रास
6	कर्नाटक पुस्तकालय संघ	1929	कर्नाटक
7	पंजाब पुस्तकालय संघ	1929	पंजाब
8	बॉम्बे राज्य पुस्तकालय संघ	1935	बॉम्बे
9	बिहार पुस्तकालय संघ	1936	बिहार
10	मालाबार पुस्तकालय संघ	1937	केरल
11	असम पुस्तकालय संघ	1938	असम
12	उत्कल पुस्तकालय संघ	1944	ओड़िसा
13	त्रावणकोर पुस्तकालय संघ	1945	त्रावणकोर
14	केरल पुस्तकालय संघ	1945	केरल
15	दिल्ली पुस्तकालय संघ	1953	दिल्ली
16	गुजरात पुस्तकालय संघ	1953	गुजरात
17	मध्यप्रदेश पुस्तकालय संघ	1957	मध्यप्रदेश
18	राजस्थान पुस्तकालय संघ	1962	राजस्थान
19	जम्मू एंव कश्मीर पुस्तकालय संघ	1966	जम्मू एवं कश्मीर
20	हरियाणा पुस्तकालय संघ	1966	हरियाण
21	त्रिपुरा पुस्तकालय संघ	1967	त्रिपुरा
22	मणिपुर पुस्तकालय संघ	1987	मणिपुर
23	मिजोरम पुस्तकालय संघ	1987	मिजोरम

24	मेघालय पुस्तकालय संघ	1994	मेघालय
25	नगालैंड पुस्तकालय संघ	1996	नगालैंड
26	उत्तराखंड पुस्तकालय संघ	2004	उत्तराखंड़

निष्कर्ष

पुस्तकालय संघों की स्थापना से स्थानीय संघ को बहुत ही अपेक्षाएं रहती है उनके कार्य करने की प्रबल संभावना को बल मिलता है। पुस्तकालय संघ सामुदायिक रूप से संगठित करके अन्य संघ के विकास की ओर ध्यान देते हैं। उनकी दक्षता में वृद्धि एवं कार्मिकों को प्रशिक्षत करना जैसे कार्यों के माध्यम से सेवाओं में बेहतर प्रदर्शन के लिए उन्हें अद्यतन करते है। जहां तक पुस्तकालय संसाधनों के उपयोग का है तो उनके लिए ऐसे निर्देश एवं नियमावली तैयार करते है जिसके अनुसार उनका अनुसरण किया जाता है। निश्चित ही पुस्तकालय संघ छोटे संघ या स्थानीय संघों को सामान्य सहायता एवं तकनीकी सहायता से उन्हें सक्षम करता है एवं उनके हितों की रक्षा के लिए भरपूर प्रयासरत रहते है।

संदर्भ–

1. Lynch (Beverly P.) 2010, RBM: A Journal of Rare Books, Manuscripts, and Cultural Heritage page no.32-46, 2010.
2. Jamal (Asma) 2017, Sreyas International Journal of Scientists and Technocrats, Vol. 1(11) 2017, pp. 15-18.
3. https://digitalcommons.unl.edu/cgi/viewcontent.cgi?article=1967&context=libphilprac
4. https://ilaindia.co.in/
5. http://www.iaslic1955.org.in/Default.aspx?PageID=62
6. https://egyankosh.ac.in/handle/123456789/1
7. https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/58363/1/Unit13.pdf
8. https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/35267/5/BLI 221-B4.pdf
9. https://lispedia.com/ila.php
10. https://lispedia.com/library-association.php

11. https://www.researchgate.net/publication/292242928_One_hundred_years_of_Indian_LIS_periodicals
12. https://www.ala.org/
13. https://iatlis.org/
14. http://www.nou.ac.in/Online%20Resourses/10-5/INDIAN%20LIBRARY%20ASSOCIATION%20FOR%20MLIS%20STUDENT%20(1).pdf
15. http://www.ijodls.in/uploads/3/6/0/3/3603729/464.pdf
16. https://lisnet.in/library-associations-in-india-with-establishment-year-membership-web-url/
17. https://www.researchgate.net/publication/353324882_A_Study_on_the_Role_of_Indian_Library_Associations_in_the_Scholarly_Communication_through_Websites
18. www.emeraldinsight.com/0307-4803.htm
19. https://www.researchgate.net/publication/336115850